Bharat Temples

सम्हालो सम्हालो मुझे श्यामसुन्दर

सम्हालो-सम्हालो मुझे श्यामसुन्दर,
विषय वासना में कहीं घिर न जाऊँ,
हे सरसिज-नयन श्याम, ब्रज के दुलारे,
कहीं पाप के पंक में गिर न जाऊँ,

ओ तड़पता हूँ हर रोज मैं, ओ श्याम तेरे लिये,
मिलेगा तूँ कैसे मुझे, बहुत पाप मैंने किये,
बहुत पाप मैंने किये,
कुकर्मों का सागर, कहीं भर न जाये,
तुझे पाप अपने, मैं कैसे बताऊँ,
सम्हालो-सम्हालो मुझे श्यामसुन्दर,
विषय-वासना में कहीं घिर न जाऊँ,

बहुत इश्क़ तुझसे किया, हो दीदार कैसे बता,
हो.. दयाधाम होकर तेरी, ये कैसी है हठधर्मिता,
ये कैसी है हठधर्मिता,
ये दर्द-ए-मोहब्बत, जो तूँ दे रहा है,
बता दे मुझे, जाके किसको सुनाऊँ,
सम्हालो-सम्हालो मुझे श्यामसुन्दर,
विषय-वासना में कहीं घिर न जाऊँ,

हो.. माना कि तुम हो ख़ुदा, दिखते किसी को नहीं,

झूँठे !अवध याद कर, ब्रज में क्या घूमे नहीं,
है तेरे दरश बिन, ये जीवन अधूरा,
ये दर्दे-ए-बयाँ श्याम, किसको सुनाऊँ,
सम्हालो-सम्हालो मुझे श्यामसुन्दर,
विषय-वासना में कहीं घिर न जाऊँ,

हे सरसिज-नयन श्याम, ब्रज के दुलारे,
कहीं पाप के पंक में गिर न जाऊँ,
विषय-वासना में कहीं घिर न जाऊँ,
कहीं पाप के पंक में गिर न जाऊँ,
विषय-वासना में कहीं घिर न जाऊँ,

गीत रचना- अशोक कुमार खरे

Source:
https://www.bharattemples.com/samhalo-samhaloo-mujhe-shyamsunder-vishay-vasana-me-kahi-gir-na-jaau/

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw